# St. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
27, BALLYGUNGE CIRCULAR ROAD
KOLKATA – 700 019

**Hindi Text: (2nd Term)** **(Answer Worksheet -21)** **Date: 26.11.2020**
**Topic: कबीर के दोहे** **Class -4**

---

निम्न प्रश्नो के उत्तर दो :-

1 कबीर के विचार , भाषा और रचनाओं के बारे में बताओ |

उ- कबीर ने अपने दोहों और पदों में बनावटीपन , भेद-भाव और जाति-पाति का कड़ा विरोध किया है | उन्होंने नीति की बातें बहुत ही सरल शब्दों में कही हैं | उनकी भाषा सुधक्क्ड़ी है | इनमे ब्रज, राजस्थानी, फ़ारसी आदि भाषाओँ के शब्द मिलते हैं | कबीर अनपढ़ थे , पर उन्होंने जो कुछ कहा , वह उनके शिष्यों ने लिख लिया | 'बीजक , उनका प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है |

2 कबीर ने गुरु को अमृत की खान क्यों कहा है ?

उ- कबीर ने अपने दोहों में गुरु को बहुत महत्त्व दिया है | वे कहते है कि यह शरीर विष की बेल के सामान है | इसमें बहुत सी बुराइयाँ है | सच्चा गुरु अमृत की तरह इन बुराइयों को पाने ज्ञान से दूर करता है | अगर अपना शीश देकर भी सच्चा गुरु मिले , तो भी बहुत सस्ता है |

3 हमें क्या करने से दुःख नहीं मिलेगा ?

उ- कबीर कहते है कि मनुष्य बहुत स्वार्थी है | जब तक उसके जीवन में सुख होता है ; वह ईश्वर को याद नहीं करता | जैसे ही उसके जीवन में दुःख आता है ,मंदिर जाना , पूजा करना , ईश्वर को याद करना शुरू कर देता है | कबीर कहते है कि अगर हमें सुख - दुःख दोनों में ईश्वर को याद करेंगे , तो हमें कभी भी दुःख नहीं मिलेगा | सुख - दुःख में हमें एक समान रहना चाहिए |

4 मनुष्य को अपने दिल में खोजने पर क्या मिलता है ?

उ- कबीर कहते है कि हर मनुष्य हमेशा दूसरों में दोष देखता है | वह जब किसी के अंदर बुराई देखने गए , तो उन्हें कोई भी बुरा नहीं मिला | जब उन्होंने अपने दिल में झाँका ,तो उन्हें लगा कि उनसे बुरा तो कोई भी नहीं है | मनुष्य सोचता है कि वह अच्छा है , उसमे कोई बुराई नहीं है | वह जब आत्मज्ञान से अपने अंदर देखता है तो उसे वहां बुराई ही बुराई नज़र आती है | अतः मनुष्य को दूसरों में बुराई न देखकर अपनी बुराइयों को दूर करना चाहिए |

Poonam Mehra